प्रस्तावना

मनुष्य सदैव विकासशील सजीव रहा है। उत्क्रांति के इतिहास की ओर देखें, तो मानव अपने विकास के अत्यंत शुरुआत के स्तर से ही वैयक्तिक जीवन की अपेक्षा सामाजिक जीवन को अधिक अपनाता हुआ दिखाई देता है। अपने इस सामाजिक जीवन के अंतर्गत उसने अपनी विभिन्न संवेदना, भावना, विचार, कल्पना, इत्यादि अपने साथियों के समक्ष अभिव्यक्त किया। भाषा के निर्माण से पूर्व ही उसने निजी अनुभूति की अभिव्यक्ति के कई माध्यम अजाग्रत रूप से उपयोग में ले लिए थे। जैसे मुस्कुराना, रोना, चिल्लाना, प्यार से थपथपाना, इशारे तथा चेहरे के हावभाव से समझाना, रेखा, आकृति आदि से कुछ स्पष्ट करना, इत्यादि।

मनुष्य के सांस्कृतिक विकास के साथ साथ यह भावाभिव्यक्ति का ढंग भी परिष्कृत हुआ और क्यों कि सौन्दर्य मनुष्य की एक अनिवार्य, सनातन आवश्यकता है, अभिव्यक्ति के ये माध्यम प्रायः अजाग्रत रूप से ही सौन्दर्ययुक्त होते चले। इसी प्रक्रिया के सातत्य से कालांतर में चित्रकला, शिल्पकला, वास्तुकला, काव्यकला, और संगीतकला जैसी ललित कलाओं का आविष्कार हुआ।

परिष्कृति एवं विकास के अगले स्तर पर इन कलाओं में निहित सुन्दरता के विश्लेषण का शास्त्र बना, जो 'सौन्दर्यशास्त्र' कहलाया। भारतीय सौन्दर्यशास्त्र में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्धांत का वर्णन है, जो है : 'रस-सिद्धांत'। इस शास्त्र के अंतर्गत विद्वानों ने मनुष्य-हृदय के विभिन्न भाव, अनुभूतिओं के परिष्कृत एवं अभिव्यक्त रूप को 'रस' की संज्ञा देतेहुए उसे ललितकलाओं का मूल तत्व, उनका हार्द माना है। अतः स्वाभाविक रूप से ललितकला में रस की उपस्थिति अनिवार्य है।

संगीत (गायन-वादन-नर्तन) भी ऐसी ही एक सौन्दर्यमय, रससभर ललितकला है। उसकी रसमयता पर ही उसका सौन्दर्य, उसकी उत्कृष्टि निर्भर है। संगीत की रसमयता आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।

एक ललित कला के रूप में संगीत रस से संबंधित है। उसकी तीनों विधाएँ - गायन, वादन तथा नर्तन अपनी निजी विशेषता से रस तत्त्व को उजागर करती हैं। रसमयता के परिपेक्ष्य में संगीत (गायन-वादन-नर्तन) को समझने का प्रयास करते हुए कुछ प्रश्न मेरे मन में उपस्थित हुए, जिनका संभवित समाधान प्राप्त करने हेतु इस विषय पर कुछ विश्लेषणात्मक अध्ययन करने की आवश्यकता मेहसूस हुई।

रस तत्त्व को लेकर मुख्यतः तीन पहलु हैं : रस का ग्रंथों में आलिखित सैद्धांतिक स्वरूप, कला के कारण रस की अनुभूति तथा कला के माध्यम से रस की अभिव्यक्ति।

प्रस्तुत शोधकार्य में संगीत कला की तीनों विधाएँ - गायन, वादन तथा नर्तन के परिप्रेक्ष्य में रस का जो सैद्धांतिक आलेखन हुआ है, रस की जो अनुभूति होती है तथा रस की जिस प्रकार से अभिव्यक्ति होती है - इनका विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।